

तृतीयोऽध्यायः (शब्द- विचार) सुबन्त- प्रकरण

सारे संस्कृत व्याकरण में सुबन्त और तिङत के रूप ही मुख्य विषय हैं। पाणिनि- व्याकरण में सुबन्त तथा तिङत के विषय में मूल शब्द से लेकर इसके स्वरूप तक प्रत्यय-आगम-आदेश आदि बताकर सारी आन्तरिक सिद्धि सिखाई जाती है। जिनका समझना और याद करना नितान्त आवश्यक है। यहां यह प्रयत्न किया गया है कि इस दिशा में छात्रों को कम से कम परिश्रम करना पड़े अतः केवल कुछ सुबन्त के रूप में अजन्त और हलन्त के आधार पर आदर्श के तौर पर रखेगये हैं उन्हें याद करना चाहिए।

संस्कृत के नाम या प्रातिपादिक संज्ञावाचक शब्दों के मूलरूप के आगे सात विभक्तियों के तीनों वचनों के प्रत्यय तीनों लिङ्गों में लगाकर सुबन्त के रूप बनते हैं। जैसे “राम” मूल शब्द है उसके रूप :-

“रामः रामौ रामाः” होंगे।

सर्वनाम, विशेषण और संख्यावाचक शब्दों का संज्ञावाचक शब्दों का संज्ञावाचक शब्दों के अनुसार ही वहां लिंग और वचन होता है अतः सुबन्त के अन्तर्गत ही उनके रूप आते हैं।

प्रातिपदिक :- संस्कृत व्याकरण का यह पारिभाषिक शब्द है। जब तक शब्दों के आगे विभक्ति का कोई चिह्न नहीं जोड़ा जाता तब तक वे शब्द प्रातिपदिक (अर्थवदधातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम्) कहलाते हैं। जैसे :- राम, देव, नर इत्यादि। यही शब्द “सु और जस्” इत्यादि विभक्ति-चिह्नों से युक्त होने पर पद कहलाने लगते हैं रामः देवः, नरः आदि।

यह प्रातिपदिक-अर्थवान होता है, धातु से रहित होता है, उनमें कृत, तद्धित और समासान्त प्रत्ययों के अतिरिक्त और कोई प्रत्यय नहीं लगता अर्थात् प्रत्यय रहित होता है।

लिंग :- 1. हिन्दी में दो ही लिंग होते हैं : पुलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग। संस्कृत में उक्त दोनों के अतिरिक्त तीसरा नपुंसकलिङ्ग भी होता है। कोई विशेष नियम न होने के कारण संस्कृत-शब्दों के लिंग का ज्ञान एक कठिन विषय है तो भी विद्यार्थियों को घबराना नहीं चाहिए। कोशों, व्याकरण के लिंग-सम्बन्धी अध्यायों तथा साहित्यिक ग्रन्थों से प्रतिदिन लिंग-ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए। साधारणतया यह नियम तो है ही कि जो प्राणिवाचक शब्द नर के वाचक होते हैं वे पुलिङ्ग में होते हैं और जो मादा के वाचक होते हैं वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे :- सिंहः - सिंही। हंसः - हंसी। अश्वः - अश्वा। चटकः - चटका आदि।

2. संस्कृत में एक ही पदार्थ के वाचक अनेक शब्द भिन्न-भिन्न लिंगों में भी प्रयुक्त होते हैं। यहाँ इनकी संक्षिप्त-सूची आकारादि क्रम से दी जाती है :-

पदार्थ	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुं०
आँख	-	दृश्, दृष्टिः	अक्षि, नयनम्, नेत्रम्
ऐश्वर्य	अर्थ, विभवः	श्रीः लक्ष्मीः	धनम्, वित्तम्
औलाद	संतरा	सन्ततिः	अपत्यम्
कमान	चापः,	-	धनुष्
किनारा	तटः	तटी	तटम्

जाना	गमः	गतिः	गमनम्
टखना (गिद्दा)	गुल्फः	गुटिका	गुल्फम्
तन	देहः, कायः,	तनुः, तनूः	शरीरम्, वपुष्
तीर	वाणः	इषुः (पुं स्त्री)	-
दिन	दिवसः,	वासरः	- दिनम्, अहन्
देवता	देवः	देवता	दैवम्, दैवतम्

पदार्थ

पढ़ना	पुलिंग
पत्नी	अध्यायः
पानी	दाराः (बहु०)
पुस्तक	-
प्रकाश	ग्रन्थः
फूल	आलोकः प्रकाशः
बादल	-
युद्ध	जलधरः, मेघः
राक्षस	संग्रामः
शहर	राक्षसः
सींग	-
स्वर्ग	विषाणः
हल	स्वर्गः
	सीरः

स्त्रीलिंग

अधीतिः	नपुं०
भार्या	अध्ययनम्
आपः (बहु०)	कलत्रम्
पुस्तिका	जलम्, सलिलम्
दीप्तिः	पुस्तकम्
सुमनसः (बहु०)	ज्योतिष्
-	पुष्पम्
आजिः युध्	आभ्रम्
-	युद्धम्
पुर, पूरी, नगरी	राक्षस्
विषाणी	पुरम्, नगरम्
द्यौः दिव्	विषाणम्
-	त्रिविष्टपम्, स्वर
	हलम्, लाङ्गम्

3. प्रायः विद्यार्थी उन शब्दों के अनुवाद में बहुत भूल करते हैं जिनका लिंग हिन्दी में और होता है तथा संस्कृत में और। इस भूल से बचने के लिए नीचे अकारादि क्रम से एवं संक्षिप्त सूची दी जाती है :-

हिन्दी शब्द तथा लिंग

अग्नि	(स्त्रीलिंग)
अभिलाषा	(स्त्रीलिंग)
आँख	(स्त्रीलिंग)
आत्मा	(स्त्रीलिंग पु०)
आय (आमदन)	(स्त्री०)
आयु	(स्त्री०)
उपाधि	(स्त्री०)
ऋतु	(स्त्री०)
कलम	(स्त्री०)
काया	(स्त्री०)
कालिमा	(स्त्री०)

संस्कृत शब्द तथा पुल्लिंग

अग्निः	(पुल्लिंग)
अभिलाषः	(पुल्लिंग)
अक्षि	(पुल्लिंग)
आत्मन्	(पु०)
आयुः	(पु०)
आयुष्	(नपु०)
उपाधिः	(पुं०)
ऋतुः	(पुं०)
कलमः	(पुं०)
कायः	(पुं०)
कालिमन्	(पुं०)

किरण	(स्त्री०)	किरणः	(पुं०)
गरिमा	(स्त्री०)	गरिमन्	(पुं०)
घास	(स्त्री पुं०)	घासः	(पुं०)
घंटा	(पुं०)	घण्टा	(स्त्री०)
चर्चा	(स्त्री०)	चर्चः	(पुं० चर्चा (स्त्री०))
जय	(स्त्री०)	जयः	(पुं०) चर्चा (स्त्री०)
ज्योति	(स्त्री०)	ज्योतिष्	(पुं०) चर्चा (स्त्री०)
तरा	(पुं०)	तारा, तारका	(स्त्री०)
देवता	(पुं०)	देवता (स्त्री०)	देवः (पुं०) दैवतम् (नपुं०)
देह	(स्त्री०)	देहः	(पुं०)
धातु (धात)	(स्त्री०)	धातुः	(पुं०)
धूप	(स्त्री०)	आतपः	(पुं०)
ध्वनि.	(स्त्री०)	ध्वनिः	(पुं०)

हिन्दी शब्द तथा लिंग

निधि	(स्त्री०)
पराजय	(स्त्री०)
परिधि	(स्त्री०)
पवन	स्त्री० (पुं०)
पुस्तक	स्त्री० (पुं०)
बाँह	(स्त्री०)
बिल्ली	(स्त्री०)
भुजा	(स्त्री०)
मछली	(स्त्री०)
महाभारत	(पुं०)
महिमा	(स्त्री०)
मित्र	(पुं०)
मृत्यु	(स्त्री०)
मेला	(पुं०)
रामायण	(स्त्री०)
रास (नाच)	(स्त्री०)
राशि	(स्त्री०)
वर्षा	(स्त्री०)
वस्तु	(स्त्री०)
वायु	(स्त्री०)

संस्कृत शब्द तथा पुल्लिंग

निधिः	(पुं०)
पराजयः	(पुं०)
परिधिः	(पुं०)
पवनः	(पुं०)
पुस्तकम्	(नपुं०) पुस्तकी (स्त्री०)
बाहुः	(पुं०)
बिडालः, बिडाली	(स्त्री०)
भुजः (पुं०) भुजा	(स्त्री० कभी-कभी)
मत्स्यः (पुं०) मत्सी	(स्त्री०)
महाभारतम्	(नपुं०)
महिमन्	(नपुं०)
मित्रम्	(नपुं०)
मृत्युः	(पुं०)
मेला (स्त्री०)	मेलः (पुं०)
रामायणम्	(नपुं०)
रासः	(पुं०)
राशिः	(पुं०)
वर्षाम् (नपुं०)	वर्षा (स्त्री० बहु०)
वस्तु	(नपुं०)
वायुः	(पुं०)

विजय	(स्त्री०)	विजयः	(पुं०)
विधि	(स्त्री०)	विधिः	(पुं०)
विनय	(स्त्री०)	विनयः	(पुं०)
व्यक्तिः	(पुं०)	व्यक्तिः	(स्त्री०)
व्याधि	(स्त्री०)	व्याधिः	(पुं०)
शपथ	(स्त्री०)	शपथः	(पुं०)
श्वास	(पुं०, स्त्री०)	श्वासः	(पुं०)
सन्तान	(स्त्री०)	सन्तानः	(पुं०)
संस्कृत	(स्त्री०)	संस्कृतम्	(नपुं०)
समाज	(पुं० स्त्री०)	समाजः	(पुं०)
समाधि	(स्त्री०)	समाधिः	(पुं०)
सामर्थ्य	(स्त्री० पुं०)	सामर्थ्यम्	(नपुं०)
हड्डी	(स्त्री०)	(अस्थि नपुं०)	हड्डीम् आढिकम् (नपुं०)

4. अक्षताः (साबुत, अखंडित, अबरन), प्रायः, असवः (प्रायः), दारा (पत्नी), लाजाः (फुल्लियाँ) - उक्त शब्द नित्य पुलिङ्ग बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। गृह तथा पुस्तक शब्द नपुंसक लिंग के हैं, परन्तु पुलिङ्ग में भी केवल बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

5. आपः (जल), अप्सरसः (अप्सरा), वर्षाः (वर्षा ऋतु), समाः (वर्ष), सिकताः (रेत), समनसः (फूल) - उक्त शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग तथा प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

वचन :- हिन्दी में वचन दो होते हैं :- एकवचन तथा बहुवचन। संस्कृत में इनके अतिरिक्त द्विवचन भी होता है।

(i) एकवचन :-

1. एक वस्तु या व्यक्ति आदि के लिये एकवचन का प्रयोग होता है जैसे :-

एक कलम मेज़ पर पड़ी है :- काचित् लेखनी (कलमः) फलके (मञ्चे) वर्तते।

2. सम्पूर्ण जाति का बोध कराने के लिए एकवचन भी प्रयुक्त होता है और बहुवचन भी जैसे :- सिंह मर जायेगा परन्तु घास न खायेगा = सिंह मरिष्यति घासं न भक्षयिष्यति। अथवा :- सिंहाः मरिष्यन्ति न च घासं भक्षयिष्यन्ति।

(ii) द्विवचन :-

1. दो वस्तुओं का व्यक्तियों आदि के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है जैसे :-

बाज़ार जाओ और दो कुर्सियाँ खरीद लाओ।

आपणं याहि, आसन्धौ क्रीत्वाऽऽहर च।

टिप्पणी :- स्मरण रहे कि जब दो का बोध कराने के लिए द्वंद्व, द्वय, द्वितय युग, युगल आदि शब्दों का समास के अन्त में प्रयोग होता है तब ये शब्द केवल एकवचन में आते हैं, परन्तु जब बहुत से जोड़ों का वर्णन हो तो बहुवचन में आते हैं जैसे :-

(i) योद्धा ने खड्ग से शत्रु के दोनों बाजू काट डाले।

योधः (योद्धा) खड्गेन स्त्रोर्भुद्वयमिच्छन्त।

(ii) रात चकवों के जोड़ों को पृथक्-पृथक् कर देती है।

रात्रिशचक्रवाकद्वन्द्वानि विघटयति।

(iii) बहुवचन :-

1. जब दो से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का बोध कराना हो तो बहुवचन का प्रयोग होता है जैसे :-
मैं अभी पाँच आम लाता हूँ।

अहं अधुनैव पञ्च-आम्राणि-आनयामि।

2. आदर सत्कार जतलाने के लिये हिन्दी में बहुवचन का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है। संस्कृत में मिलता तो है परन्तु थोड़ा। इसलिये प्रायः तो हिन्दी के आदार द्योतक बहुवचन का अनुवाद एकवचन से ही करना चाहिये, जहाँ विशेष सम्मान जताना हो वहाँ बहुवचन में भी प्रयुक्त कर सकते हैं जैसे :-

स्वामी दयानन्द आदर्श सन्यासी थे।

स्वामी दयानन्दः सन्यासिनामादर्शः आसीत्॥

कबीर साहब कह गए हैं।

कबीरो अकथयत्।

3. माता, पिता, आचार्य, गुरु आदि पूज्य व्यक्तियों के लिये आने वाले शब्दों के साथ जब आदर के लिए “पाद” या “चरण” शब्द जोड़े जाते हैं तब वह नित्य बहुवचन में आते हैं। जैसे :-

गुरु जी की आज्ञा है कि सब विद्यार्थियों को समय पर श्रेणी में आना चाहिए।

सर्वविद्यार्थिभिः समय एव श्रेण्यामागन्तव्यम् गुरुचरणानाम् (पादानाम्) आदेशः

4. जिन देशों या प्रान्तों के नाम वहाँ बसने वाली जातियों के नामों पर पड़े हुए हैं उनका अनुवाद बहुवचन से करते हैं। यदि साथ देश, प्रान्त, विषय आदि शब्द जोड़ दिया जाये तब एकवचन ही अनुवाद में प्रयुक्त होता है। जैसे :-

बाबू सुभाष चन्द्र का जन्म बङ्गाल में हुआ।

बाबूसुभाषचन्द्रो बङ्गषूयद्यत अथवा बङ्गप्रान्ते

5. दारा, अप, प्राण आदि कुछ संस्कृत शब्द सदा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

(क) महाराज अज की पत्नी इन्दुमती ने अपनी प्राण त्याग दिये।

महाराजास्याजस्य द्वारा इन्दुमती स्व-प्राणानत्यजत्।

(ख) जल से शरीर शुद्ध होता है।

अद्भिःगात्राणि शुध्यन्ति।

6. निम्नलिखित प्रकार के शब्द हिन्दी में बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु संस्कृत में उनका अनुवाद एकवचन या द्विवचन में किया जाता है। जैसे :-

(क) कल हमने रावी में दो हंस देखे।

ह्रौ वयमिरावत्यां हंसद्वयं, (हंसयुगलम्, हंसौ) अपश्याम।

(ख) कभी-कभी द्विवचन का प्रयोग एक ही जाति के नर और नारी का बोध कराने के लिए भी किया जाता है। जैसे :-

(i) सहन में बैठे कबूतरी-कबूतर दाने खा रहे हैं।

प्राङ्गण उपष्टिौ कपोतौ कणान् भक्षयतः।

(ii) जिसने माता-पिता की सेवा की उसने पितृ ऋण चुका दिया।

येन पितरौ सेवितौ तेन पितृणं शोधितम्।

(iii) यदि पति-पत्नी बुद्धिमान् हों तो गृहस्थ-जीवन में सुख ही सुख है।

यदि दम्पती बुद्धिमन्तौ भवेतां तर्हि गार्हस्थ्यं सुखमयं जायते॥

(ग) हाथ, पाँव, आँख, कान आदि कई शब्द हिन्दी में प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं क्योंकि हिन्दी आदि वर्तमान भाषाओं में द्विवचन नहीं है। जब ये दो के वाचक हों तो इनका प्रयोग द्विवचन से ही करना चाहिए। जैसे :-

(i) हाथ धोकर ही भोजन करना चाहिए-

हस्तौ प्राक्षाल्यैव भोक्तव्यम्।

(ii) बिल्ली को देखकर कबूतर आँखें बन्द कर लेता है।

बिडालं दृष्ट्वा कपोतो नेत्रे निमीलयति।

संज्ञावाचक शब्द :- संज्ञावाचक शब्द तीन भागों में विभक्त हैं :-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द।

2. जातिवाचक संज्ञा शब्द।

3. भाववाचक संज्ञा शब्द।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग :- (क) संस्कृत के जो शब्द हिन्दी में ज्यों के त्यों रहते। (तत्सम शब्द) अनुवाद में उन्हें ही रहने देते हैं या उनके समानार्थक शब्दों का प्रयोग कर देते हैं। जैसे :-

(i) मैं गत वर्ष अयोध्या से काशी और काशी से जगन्नाथपुरी गया था।

अहं गतवर्षे-अयोध्यायाः (साकेतात्) काशी (वाराणासी) काशीच (वाराणस्याश्रय) जगन्नाथपुरीमगच्छम्।

(ii) वैदिकधर्म, बौद्धधर्म और जैन धर्म भारत वर्ष में उत्पन्न हुए।

वैदिकधर्मो, बौद्धधर्मो, जैनधर्मश्च भारतवर्षे (आर्यावर्तेऽदपद्यन्त)।

(ख) जो शब्द निकले तो संस्कृत से हैं (तद्भव शब्द) परन्तु कुछ बिगड़ चुके हैं, अनुवाद में उनका पहला (संस्कृत का) रूप वहीं रखना चाहिए जहाँ इन्हें पहचानने में कठिनाई न पड़े, जैसे :-

(i) श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर का नाम पृथ्वी में प्रसिद्ध है।

श्री रवीन्द्रनाथठक्कुरस्य नाम सम्पूर्णपृथिव्यां प्रख्यातम्।

(ii) श्री भगवान् दीन ने हिन्दी में अलंकार-विषय पर एक सुन्दर ग्रन्थ लिखा है।

श्री भगवान्दीनो हिन्द्यामलङ्कारविषये रम्यं ग्रन्थमरच्यत्।

यहाँ “भगवान्दीन” का अनुवाद “भगवद्” से करना चाहिए, चाहे अर्थ दोनों का एक ही है।

(ग) जब देशी तथा विदेशी संज्ञावाचक शब्दों का अनुवाद करना हो तो प्रायः वही शब्द रहने दिये जाते हैं। यदि उनके लिए कोई प्रचलित शब्द मिलते हों तो उनका प्रयोग करना चाहिए। जैसे :-

(i) हिटलर जर्मनी का डिक्टेटर था।

हिटलरो जर्मनीदेशस्य (जर्मन्याः) स्वच्छन्दशासकः आसीत्।

(ii) रावी के किनारे लाहौर के समीप शाहदरा गाँव है, वहाँ पर लच्छेशाह वैद्य बड़ा प्रसिद्ध हकीम है।

इरावत्याः कूले लवपुरस्य समीपे शाहदराख्यो ग्रामो विद्यते, तत्र लच्छेशाहोऽतिप्रसिद्धो वैद्यो वर्तते।

(यहाँ शाहदरा गाँव का अनुवाद शाहदराग्राम, शाहदरासंज्ञको ग्रामः, शाहदरानामको ग्रामः आदि से तथा लच्छेशाह का लच्छेशाहनामाः, नामकः संज्ञकः-इत्याख्यः आदि से भी कर सकते हैं)

2. जातिवाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग :- (क) तत्सम शब्दों का अनुवाद उन्हीं या उनके समानार्थक शब्दों से किया जाता है। जैसे :-

चारों वर्षों में ब्राह्मण पूजनीय होते हैं -

चतुर्वर्ण्ये (चतुर्षु वर्णेषु ब्राह्मण्यः विप्रायः द्विजाः आदि) पूज्यतमाः)।

(ख) तद्भव शब्दों का अनुवाद में उनके मूल शब्द या उनके पर्यायवाची शब्द रखे जाते हैं। जैसे :- पंछी वृक्षां पर रहते हैं और मछलियाँ जल में।

पक्षिणः (खगा, विहगाः, विहङ्गमाः आदि) तरुषु निवसन्ति मत्स्याः (मीनाः, झषाः) च जले।

(ग) जाति, उपजाति, उपनाम के वाचक शब्दों के लिए जहाँ संस्कृत शब्द प्रचलित हों वहाँ उनका प्रयोग करना चाहिए नहीं तो उन शब्दों के आगे उपाख्य, उपनाम, उपाह्व आदि शब्द लगाने चाहिए। जैसे :-

डॉ० यशवन्त सिंह परमार हिमाचल-प्रदेश के निर्माता थे।

परमार डॉ० यशवन्त सिंहो हिमाचलप्रदेशस्य निर्माताऽऽसीत्।

(घ) जिन देशी तथा विदेशी संज्ञाओं के लिए संस्कृत शब्द बनकर प्रचलित हो गए हों उनका प्रयोग तो करना ही चाहिए, परन्तु ऐसे नवीन शब्द भी न बनाने चाहिए जिनका अर्थ दूसरे न समझ सकें। जैसे :-

(i) आज कल के युद्धों में जिनके पास हवाई जहाज न हो उनका जीतना असम्भव है।

आधुनिकसंग्रामेषु येषां पाश्वे वायुयानानि नस्युस्तेषां विजयीऽसम्भवः।

(ii) गतवर्ष सूबा पञ्जाब के होशियारपुर जिले में हरिजनोद्धार कानफ्रेंस हुई थी।

गतवर्षे पञ्चनदप्रान्तस्य होशियारपुर-मण्डले हरिजनोद्धार सम्मेलनमभवत्।

(ङ) वर्तमान आविष्कारों के वाचक शब्दों का अनुवाद उनके पीछे यान, यन्त्र आदि शब्द लगाकर या नपुंसकलिङ्ग के रूप बनाकर करना चाहिए। जैसे :-

भारत में हंस राज ने भी रेडियो बनाया परन्तु उसका प्रचार नहीं हुआ =

भारते हंसराजोऽपि रेडियोनामकयन्त्रं निर्मितवान् परन्तु तस्य प्रचारो न जातः।

3. भाववाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग :- (क) उत्पत्ति, विनाश, वृद्धि, क्षय, उन्नति, अवनति आदि तत्सम शब्दों का अनुवाद इन्हीं शब्दों से या इनके पर्यायवाची शब्दों से किया जाता है। जैसे :-

(i) उत्पत्ति और विनाश सब प्राणियों के साधारण धर्म हैं।

उत्पत्तिविनाशौ सर्वप्राणिनां साधारणौ धर्मौ।

(ii) जिसकी उन्नति होती है उसकी अवनति भी होती ही है।

यस्योन्नतिः (उपचयः, अभ्युदयः) जायते तस्यावनतिः (अपचयः) अपि भवत्येव।

(ख) नहाना, खाना, पीना, सोना, जागना आदि तद्भव शब्दों के अनुवाद में इनके मूलशब्द, स्नानम्, खादनम्, पानम्, शयनम्, जागरणम् आदि भी रखे जा सकते हैं और इनके पर्यायवाची आप्लवः, अवगाहनम्, अक्षणम् आदि भी। जैसे :-

रात को शीघ्र सो जाना और प्रातः शीघ्र जागना मनुष्य के स्वास्थ्य, समृद्धि तथा बुद्धि की वृद्धि करता है।

रात्रौ शीघ्रं शयनं (स्वापः, संवेशः) प्रातश्चाविलंवेन जागरणं (प्रबोधनम्) मनुष्यस्य स्वास्थ्यं (आरोग्यम्) समृद्धिम्, (ऐश्वर्यम्) बुद्धिं (मतिम्) च वर्धयति।

(ग) स्पीड टाइम-टेबल, प्रोग्राम, डिसिप्लिन, प्रोग्रेस आदि के लिए जो वेगः, समयविभागः, कार्यक्रमः अनुशासनम्, प्रगतिः आदि शब्द बन गए हैं, उन्हीं का प्रयोग उचित है। जैसे :-

स्कूल का टाइम-टेबल इतना खराब है कि हमें चार घण्टियाँ खाली बैठना पड़ता है।

विद्यालयस्य समय-विभागः इत्थं दूषितो यद्वयं चतस्रो घण्टा अव्यापृतास्तिष्ठामः।

(घ) खनखन, छमछम, टनटन, झनझन आदि कोमल देशी अनुकरणात्मक शब्दों का अनुवाद करते समय इनके “न” को “ण” कर दिया जाता है और पीछे “इति” “निनद” “रणित” आदि कोमल शब्द लगाए जाते हैं। जैसे :-

जब हम स्कूल पहुँच तब घण्टी की टनटन बन्द हो चुकी थी।

यदा वयं विद्यालयं प्राप्तास्तदा घण्टायाः टणटणनिनादः (टणटणरणितम्, टणितिरणितम्, टणटणितिनिनः) मिरत आसीत्।

(च) गड़बड़, खटपट, पटपट, ठकठक आदि कठोर अनुकरणात्मक शब्दों का अनुवाद इनको दीर्घ बनाकर तथा पीछे “शब्दः” “नादः” “ध्वानः” “ध्वनिः” आदि शब्द जोड़ कर किया जाता है या इनके नाम धातुओं के “क्त” प्रत्ययान्त रूप भी प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे :-

रेलगाड़ी की गड़गड़ाहट से कान फटे जा रहे हैं।

वाष्पस्य गड़गड़शब्देन (ध्वनिना, गड़गड़ायितेन) कर्णो-विदीर्यते।

(छ) जिन जड़-चेतन पदार्थों की ध्वनियों के लिए साहित्य में विशेष शब्द प्रचलित हैं, उनका अनुवाद उन्हीं शब्दों से करना उचित है। जैसे :-

उस उपवन में कोयलों की कुहू, मोरों की कूक, भौरों की गुज्जार तथा चिड़ियों की चूँ चूँ सब का मन हर लेती थी।

तस्मिन्नुपवने पिकानां कूजनं (कूजितम्) केकिनां केका, द्विरेफाणां गुज्जनं (गुज्जितम्), चटकानां चुङ्कारश्च सर्वेषां मनोऽहरत्।

संज्ञा शब्दों (प्रातिपादिकों) के भेद :- मुख्य रूप में दो भेद हैं :-

1. अजन्त। 2. हलन्त।

1. अजन्त :- जिन शब्दों के अन्त में अच् (स्वर) हो। जैसे :- देव, हरी आदि इसके लिंगभेद से तीन भेद हैं :-

1. अजन्त-पुंल्लिंग, 2. अजन्त-स्त्रीलिंग 3. अजन्त-नपुंसकलिंग।

2. हलन्त :- जिन शब्दों के अन्त में कोई व्यञ्जन हों। जैसे :- भवतु, महत् आदि सिके भी लिंगभेद से तीन भेद हैं :-

(1) हलन्त-पुंल्लिंग, (2) हलन्त-स्त्रीलिंग, (3) हलन्त-नपुंसकलिंग।

विभक्ति :- कारकों और वचनों का बोध कराने वाली “विभक्ति” हुआ करती है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार निम्न प्रकार से सात विभक्तियाँ मानी जाती हैं :-

विभक्ति	कारक	प्रत्यय	अर्थ
1. प्रथमा विभक्ति	कर्ता	सु, औ, जस्	ने
2. द्वितीया विभक्ति	कर्म	अम्, औ, शस्	को
3. तृतीया विभक्ति	करण	टा, भ्याम्, भिस्	से, के द्वारा
4. चतुर्थी विभक्ति	सम्प्रदान	डे, भ्याम्, भ्यस्	को, के लिए
5. पंचमी विभक्ति	अपादान	डसि, भ्याम्, भ्यस्	से, पृथक् होना
6. षष्ठी विभक्ति	सम्बन्ध	डस्, ओस्, आम्	का, के, की रा, रे री
7. सप्तमी विभक्ति	अधिकरण	डि, ओस्, सुप्	में, पर
8. सम्बोधन विभक्ति	संबोधन	प्रथमा के प्रत्यय	भोः, रे आदि।

यहां पर 8 संख्या में सम्बोधन रखा है। केवल सौकार्यार्थं, (सुविधा के लिए) वैसे इसकी गणना पृथक् से नहीं की जाती क्योंकि सम्बोधन के रूप प्रायः प्रथमा विभक्ति के समान ही होते हैं।